I.A.S.E. Bilaspur

1. Name of the sm contributor – Dr. Mahalaxmi singh

2. Class and subject - B.ed. 2nd year pedagogy in hindi .

3. Unit - 3rd

1. Topic . गद्य शिक्षण के उद्देश्य , गद्य के भेद

2. Objective . गद्य शिक्षण के उद्देश्य, गद्य के भेद को जानना

3. Cotente . गद्य शिक्षण

4. Point Of Evaluation -

(क) गद्य की विविध विधाओं / रूपों से परिचय –

• गद्य विधाओं का परिचय , कहानी , उपन्यास , निबन्ध , नाटक , जीवनी , संस्मरण , रिपोर्ताज के उदाहरणों से उनकी संरचना , विशेषताओं एवं विकास को समझना।

(ख) गद्य विधाओं का शिक्षण –

• कहानी , उपन्यास , निबन्ध , नाटक शिक्षण।

• नाटक को पढ़ना पढ़ाना (संवाद लिखना , मंचन करना , अभिनय , अभिव्यक्ति)।

• समकालीन साहित्य का शिक्षण (दलित विमर्श , स्त्री विमर्श , बाल साहित्य)।

(ग) गद्य विधाओं के शिक्षण के लिये शिक्षण योजना व गतिविधियॉ तैयार करना।

गद्य विधा -- गद्य गद् **धातु** से **बना है , जिसका** अर्थ **होता** है - **बोलना या कहना। विधा का** अर्थ **होता** है **-प्रकार। गद्य विधाओं से तात्पर्य गद्य के प्रकारों से है।**

सम्पूर्ण साहित्य **को दो** भागों में बाँटा **जा सकता** है – गद्य **और** पद्य। गद्य **का** स्वरूप गद्य साहित्य **की** रचनाओं **को** कहते हैं **जो तारतम्य**पूर्ण **तथा विचार**पूर्ण वाक्यों में **लिखा जाता** है **और** छन्दोमयी **रचना को** पद्य कहते हैं। (1988)

गद्य की विधाएँ

हिन्दी गद्य साहित्य **की** विधाओं **को दो** वर्गों में बाँटा **जा सकता** है (1) प्रमुख, (2) **गौण या** प्रकीर्ण।

(1) प्रमुख विद्याएॅ

(1) नाटक (2) एकांकी (3) उपन्यास (4) कहानी (5) निबंध (6) आलोचना ।

(2) गौण या प्रकीर्ण विद्याएँ –

(1) जीवनी (2) आत्मकथा (3) यात्रा वृतान्त (4) संस्मरण (5) रेखाचित्र (6) गद्य – काव्य (7) रिपोर्ताज (8) डायरी (9) भेंटवार्ता (10) पत्र – साहित्य ।

1. नाटक –

नाटक दृश्य काव्य **का एक** भेद है। **यह अभिनय** गद्य **विधा** है। **यह ऐसा** साहित्य **रूप** है जिसमें रंगमंच **पर** पात्रों के **द्वारा किसी कथा का** प्रदर्शन **होता** है। **यह** प्रदर्शन **अभिनय,** दृश्य ,

जा, संवा द, नृ त्य , गीत आदि के माध्यम से प्र स्तु त किया जाता है। नाटक के छः तत्व होते हैं।)

(1) कथावस्तु ए ;2द्ध चरित्र .चित्रण ए ;3द्ध संवाद .योजनाए ;4द्ध देशकाल ए ;5द्ध उद्देश्य ए ;6द्ध ठींिंपसप

2.एकांकी —

एकांकी दृश्य काव्य का एक भेद है। यह एक अंक का नाटक होता है। इसमें कई दृश्य रह सकते हैं, पर अंक एक ही होता है। यह नाटक की अपेक्षा छोटी रचना होती है। प्रसाद कृ त 'एक घूँ ट' हिन्दी की सबसे पहली रचना है। यद्यपि प्रसाद के एक घु ट' को हिन्दी का प्रथम एकांकी होने का गौरव प्राप्त है, किन्तु हिन्दी -एकांकी -साहित्य की धारा को मु क्त रूप से प्रवाहित करने का श्रेय डॉ. रामकु मार वर्मा को ही है। इनके एकांकियों में काव्य जैसी सरसता मिलती है। डॉ. वर्मा का प्र कृ त क्षेत्र ऐतिहासिक एवं सामाजिक कथानकों पर आधारित एकांकी है। इनके रेशमी टाई, चारुमित्रा , सप्त किरण, पृ थ्वी राज की आँखें , चार ऐतिहासिक एकांकी , कौमु दी महोत्सव , मयू र पंख आदि कई एकांकी -संग्रह प्रकाशित हो चु के हैं। भु वने श्व र, डॉ. वर्मा के ही समकालीन हैं और उनके एकांकी -संग्रह 'कारवाँ ' को पाकर हिन्दी जगत को इनसे बहु त आशाएँ बंधी थीं, किन्तु असर, स्ट्राइक , कठपु तलियाँ , तोप के घोड़े आदि एकांकियों के बाद उन्होंने इस क्षेत्र से संन्यास ले लिया।

3.उपन्यास

उपन्यास भी आधु निक यु ग की देन है। उपन्यास ऐसी गद्य रचना है जिसमें यथार्थ जीवन का चित्रण किसी कथावस्तु के सहारे किया जाता है। इसमें सम्पू र्ण यु ग जीवन का चित्रण होता है। इसका उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं अपितु जीवन के रहस्यों का उद्घाटन भी है। उपन्यास को आधु निक यु ग का महाकाव्य कहा जाता है।

उपन्यास वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। बेवस्टर के अनु सार "उपन्यास एक ऐसा कल्पित , विशालकाय व गद्यमय आख्यान है, जिसमें एक ही कथावस्तु के अन्तर्गत यथार्थ जीवन का प्रतिनिधि करने वाले पात्रों और उनके क्रियाकलापों का चित्रण रहता है।" इसके विकास को भी मोटे रूप से तीन यु गों में बाँटा जाता है -(1) प्रेमचन्द पू र्व यु ग, 2) प्रेमचंद यु ग और, (3) प्रेमचंदोत्तर यु ग। हिन्दी उपन्यास की कहानी 'रानी केतकी की कहानी' से शु रू होती ह, किन्तु आचार्य शु क्ल ने उपन्यास को सर्वप्रथम रचना लाला श्री निवास कृ त 'परीक्षा गु रु ' को माना है। ठाकु र जगमोहन सिंह कृ त 'श्यामा स्वप्न ', बाल कृ ष्ण भट्ट कृ त सौ अजान एक सु जान' का भी ऐतिहासिक महत्त्व है। बंगला उपन्यासों का भी अनु वाद किया गया।

4.कहानी —

कहानी भी गद्य की कथात्मक विधा है। एलन पो के अनु सार-"कहानी एक ऐसा आख्यान है, जो इतना छोटा हो कि एक बैठक में पढ़ा जा सके और जो पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के लिए लिखा गया हो।" वह स्वत : पू र्ण रचना होती है, उपन्यास का खण्ड नहीं। कहानी उपन्यास की नानी है। उपन्यास की भाँति इसमें मानव जीवन का सम्पू र्ण चित्र नहीं होता, उसमें किसी एक घटना या अंश का मार्मिक वर्णन होता है। 'इन्दु मती' हिन्दी की पहली कहानी है। कहानी की परम्परा यद्यपि बहु त पु रानी है, किन्तु हिन्दी की कहानी का इतिहास आधु निक यु ग से ही आरम्भ होता है। इसक विकास को भी तीन यु गों में बाँटा जा सकता है —प्रेमचन्द पू र्व यु ग, प्रेमचंद यु ग तथा प्रेमचंदोत्तर यु ग।

5. निबन्ध —

निबंध एक ऐसी रचना है, जिसमें लेखक अपने भावों तथा विचारों को आत्मीयता पू र्वक किसी विषय के माध्यम से रखता चला जाता है। बाबू गु लाबराय के अनु सार "निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता , सौष्ठव एवं सजीवता तथा आवश्यक संगठन और सम्बद्धता साथ किया गया हो।"

निबंध के प्रकार — विषयवस्तु की दृष्टि से निबंध प्र मु ख चार प्रकार के होते हैं।

(1) कथात्मक -इस प्रकार के निबंधों में काल्पनिक वृ त्त , आत्मचरित्रात्मक प्रसंग , पौराणिक आख्यान आदि का प्रयोग किया जाता है।

(2) वर्णनात्मक निबंध -इनमें प्र कृ ति या मनु ष्य जीवन की घटनाओं का वर्णन होता है।

(3) विचारात्मक निबन्ध —ये निबन्ध चिन्तन प्रधान होते हैं। इनमें लेखक किसी विषय पर अपने विचार सु बद्ध रीति से अपने विशेष दृष्टिकोण के साथ प्र स्तु त करता है।

(4) भावात्मक निबन्ध -भावात्मक निबंध में लेखक के हृदय से विस्मृ त भावधारा ही विचार सू त्र का निर्णय करती है। लेखक का उद्देश्य अपनी क्रसी सरस अनु भू ति को पाठक के हृदय तक पहुँ चाना होता है। ऐसा निबंध अनु भू ति की दृ ष्टि से कविता के निकट पहुँ च जाता है।

This is not registered version of TotalDocConverter

6. आलोचना –

आलोचना गद्य की एक ऐसी निबन्धात्मक विधा है, जिसमें किसी रचना के गुण दोषों का विश्लेषण किया जाता है तथा साहित्य शास्त्रीय प्रतिमानों का विवेचन किया जाता है। हिन्दी आलोचना के विकास का इतिहास अन्य गद्य विधाओं की अपेक्षा कुछ अधिक प्राचीन है। संस्कृत काव्य आलोचना की परम्परा रीतिकाल में स्थानान्तरित हुई। केशवदास ने 'कविप्रिया' व एवं 'रसिकप्रिया' का सृजन किया तथा अन्य रीतिकालीन कवियों ने भी काव्यालोचन के सम्बन्ध में कुछ-कुछ लिखा है।

1. जीवनी --

जीवनी को अंग्रेजी में 'बायोग्राफी' कहते हैं। जीवनी व्यक्ति विशेष के जीवन और चरित्र की आत्म अभिव्यक्ति है। यह घटनाओं का अंकन नहीं वरन् चित्रण है इसमें लेखक नायक के षों का सरस चित्रण करता है। आत्मकथा में लेखक खुद अपनी कलम से अपनी कथा लिखता
जबकि जीवनी में लेखक दूसरे के जीवन की कथा लिखता है।
इस विधा का भी प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। उस युग के जीवनी लेखकों में तेन्दु, कार्तिक प्रसाद खत्री, राधाकृष्ण दास आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। इन्होंने सन्तों कवियों
पुरुषों की जीवनियाँ लिखीं।

2. **आत्मकथा**

आत्मकथा को अंग्रेजी में 'ऑटोबायोग्राफी' कहते हैं। यह ऐसी गद्य रचना है, जिसमें लेखक एवं तटस्थ हृदय से अपने गुण दोषों का विवेचन करता चला जाता है।
आत्मकथा की विकास परम्परा भारतेन्दु युग से देखने को मिलती है। भारतेन्दु कृत "कुछ बीती कुछ जग बीती के प्रकाशन से आत्मकथा का नियमित लेखन प्रारम्भ हुआ। 44 बीके -दत्त ने 'निज वृतान्त' तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने 'कल्याण मार्ग का पथिक' लिखा। द्विवेदी में 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी' और 'श्यामसुंदर दास' ने आत्मकथा लिखी।
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की 'आत्मकथा' का प्रकाशन हिन्दी की एक महत्त्वपूर्ण घटना है, इसमें कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक पहलुओं का भी लेखा-जोखा है। वियोगी हरि की आत्मकथा ''मेरा जीवन प्रवाह', गुलाबराय की 'मेरी असफलताएँ' पन्त की '60 वर्ष' एक बांका राहुल जी की 'मेरी जीवन यात्रा' हरिवंशराय बच्चन की, 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' और डिका निर्माण फिर-फिर आदि आत्मकथा की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं।
वह विधा कमोवेश आज भी प्रचलित है।

1. संस्मरण –

संस्मरण एक घटना प्रधान गद्य-रचना है इसमें प्रिय या श्रद्धेय व्यक्ति के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण होता है या झाँकी होती है। इसमें रेखाचित्र की भाँति व्यक्ति के व्यापक व्यक्तित्व पर प्रकाश नहीं डाला जाता बल्कि उसे किसी एक पक्ष का उद्घाटन होता है।
हिन्दी में संस्मरण लेखन का प्रारम्भ 'पद्म सिंह शर्मा' ने किया। इसके पश्चात श्रीराम शर्मा की पुस्तक सन 42 के संस्मरण' का प्रकाशन हुआ। महादेवी कृत 'पथ के साथी' बेनीपुरी कृत। मील के पत्थर' आदि रोचक संस्मरण हैं।

1. रिपोर्ताज –

रिपोर्ताज ' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है और अंग्रेजी शब्द 'रिपोर्ट' से इसका निकट सम्बन्ध
है। रिपोर्ताज का तात्पर्य होता है घटना विवरण। रिपोर्ट समाचार पत्र के लिए लिखी जाती है और इसमें साहित्यिक तत्व प्रायः नहीं होते हैं रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही रिपोर्ताज कहते हैं इसमें लेखक छोटी-छोटी घटनाओं को देकर पाठक के मन पर एक सामूहिक प्रभाव डालने का प्रयत्न करता है। रिपोर्ताज का विषय कभी कल्पित नहीं होता है।